तर्ज--रसिक बलमा

कहे अगंना ,रोग लगाया,
कैसा रोग लगाया

1--रोग ये कासो कहिये,
पीठ दई परआतम को
विरहा मे तेरी प्यारी,
रो रो के अब तो हारी

2--पिऊं मुख ना देखूं जों लो,
रोग मिटे ना तों लो
उस पल घड़ी को देखूं,
राह मैं अगनां तेरी

3--सुख विरहा में है ऐता,
होगा मिलन में केता
अब मै तो समझी पिया,
लीला वो अपनी सारी